पंचांग-जुलाई-2019

व्यास पूजा, गुरु पूर्णिमा

भारतीय व्रत और उत्सव जुलाई-2019

दिनांक 1 मास शिवरात्रि, दिनांक 29 भौमवतीअमावस्या,दिनांक 3 गुप्त नवरात्र प्रारंभ, दिनांक 4 श्री जगदीश यात्रा, दिनांक 6 विनायक चतुर्थी,दिनांक 7 कुमार षष्ठी,दिनांक 9 दुर्गा अष्टमी, दिनांक 10 भड़डलिया नवमी, दिनांक 12 देव शयनी एकादशी व्रत,चतुर्मास व्रत प्रारंभ, दिनांक 14 पार्वती व्रत प्रारंभ, प्रदोष व्रत, दिनांक 16 सन्यासियों का चतुर्मास प्रारंभ, सत्यव्रत, व्यास पूजा, गुरु पूर्णिमा ,चंद्र ग्रहण, दिनांक 17 संक्रांति पुण्य, दिनांक 20 श्री गणेश चतुर्थी व्रत, दिनांक

22 नागपंचमी, दिनांक 24 कालाष्टमी, दिनांक 28 एकादशी व्रत, दिनांक 29 सोम प्रदोष व्रत, दिनांक 30 मास शिवरात्रि|

ग्रह स्थिति जुलाई- 2019

ग्रह स्थिति- दिनांक 8 बुध वक्री, दिनांक 11 मंगल अस्त,दिनांक 13 बुधास्त पश्चिम, दिनांक 17 सूर्य कर्क में, दिनांक 22 शुक्रास्त पूर्व,दिनांक 23 शुक्र कर्क में, दिनांक-30 बुध मिथुन में,दिनांक 30 बुधोदय पूर्व |

मूल विचार जुलाई- 2019

मूल विचार - दिनांक 5 को 2:29 से दिनांक 6 को 22:09 तक, दिनांक 13 को 16:26 से दिनांक 15 को 18:51 तक, दिनांक 23 को 13:13 से दिनांक 25 को 17:38 तक गंड मूल नक्षत्र हैं |

पंचक विचार जुलाई 2019

पंचक विचार - दिनांक 19 को 14:57 से दिनांक 24 को 15:41 तक पंचक है |

भद्रा विचार जुलाई-2019

भद्रा विचार - दिनांक 1 को 4:56 से 16:05 तक, दिनांक 6 को 2:39 से 13:09 तक, दिनांक 9 को 5:24 से 16:28 तक, दिनांक 12 को 12:43 से दिनांक 13 को 00:30 तक, दिनांक 16 को 1:48 से 14:25 तक, दिनांक 19 को 20:30 से दिनांक 20 को 9:13 तक, दिनांक 23 को 16:15 से दिनांक 24 को 5:10 तक, दिनांक 27 को 7:57 से 19:45 तक, दिनांक 30 को 14:49 से दिनांक 31 को 1:27 तक भद्रा है |

सर्वार्थ सिद्धि योग जुलाई 2019

सर्वार्थ सिद्धि योग - दिनांक 1 को 5:07 से 2 को 5:31, 4 जुलाई 5:32 से 5 जुलाई 2:29 तक, 7 जुलाई 20:13 से 8 जुलाई 5:34 तक,14 जुलाई 5:37 से 15 जुलाई 5:38 तक, 23 जुलाई 5:41 से 23 जुलाई 13:13 तक, 25 जुलाई 5:42 से 17:38 तक, 27 जुलाई 19:29 से 28 जुलाई 5:44 तक 29 जुलाई 5;44 से 29 जुलाई 18:21 तक |

ज्वालामुखी योग

पड़वा मे तज मूल को, पंचमी भरनी धार, नवमी रोहिणी कृतिका ,अष्टम तिथि विचार ||
दसवीं में अश्लेषा तू तज कहता साच बुरी तिथि नक्षत्र ये है ज्वालामुखी पांच |

शुभ विवाह मुहूर्त जुलाई -2019

शुभ विवाह मुहूर्त - 6,7,8,9,10,11 |

दिशाशूल

दिशाशूल क्या होता है ? इसके बारे मे सम्पूर्ण जानकारी

दिशाशूल क्या होता है ? क्यों बड़े बुजुर्ग तिथि देख कर आने जाने की रोक टोक करते हैं ? आज की युवा पीढ़ी भले हि उन्हें आउटडेटेड कहे ..लेकिन बड़े सदा बड़े हि रहते हैं ..इसलिए आदर करे उनकी बातों का ;दिशाशूल समझने से पहले हमें दस दिशाओं के विषय में ज्ञान होना आवश्यक है| हम सबने पढ़ा है कि दिशाएं ४ होती हैं |१) पूर्व २) पश्चिम ३) उत्तर ४) दक्षिण

परन्तु जब हम उच्च शिक्षा ग्रहण करते हैं तो ज्ञात होता है कि वास्तव मेंदिशाएँ दस होती हैं |१) पूर्व२) पश्चिम३) उत्तर४) दक्षिण५) उत्तर - पूर्व६) उत्तर - पश्चिम७) दक्षिण – पूर्व८) दक्षिण – पश्चिम९) आकाश१०) पातालहमारे सनातन धर्म के ग्रंथो में सदैव १० दिशाओं का ही वर्णन किया गया है,जैसे हनुमान जी ने युद्ध इतनी आवाज की कि उनकी आवाज दसों दिशाओं में सुनाई दी | हम यह भी जानते हैं कि प्रत्येक दिशा के देवता होते हैं |

दसों दिशाओं को समझने के पश्चात अब हम बात करते हैं वैदिक ज्योतिष की |ज्योतिष शब्द "ज्योति" से बना है जिसका भावार्थ होता है "प्रकाश" |वैदिक ज्योतिष में अत्यंत विस्तृत रूप में मनुष्य के जीवन की हरपरिस्तिथियों से सम्बन्धित विश्लेषण किया गया है कि मनुष्य यदि इसको तनिकभी समझले तो वह अपने जीवन में उत्पन्न होने वाली बहुत सी समस्याओं से बचसकता है और अपना जीवन सुखी बना सकता है |

दिशाशूल क्या होता है ?
दिशाशूल वह दिशा है जिस तरफ यात्रा नहीं करनाचाहिए | हर दिन किसी एक दिशा की ओर दिशाशूल होता है |
१) सोमवार और शुक्रवार को पूर्व
२) रविवार और शुक्रवार को पश्चिम
३) मंगलवार और बुधवार को उत्तर
४) गुरूवार को दक्षिण
५) सोमवार और गुरूवार को दक्षिण-पूर्व
६) रविवार और शुक्रवार को दक्षिण-पश्चिम
७) मंगलवार को उत्तर-पश्चिम
८) बुधवार और शनिवार को उत्तर-पूर्व

परन्तु यदि एक ही दिन यात्रा करके उसी दिन वापिस आ जाना हो तो ऐसी दशामें दिशाशूल का विचार नहीं किया जाता है |
परन्तु यदि कोई आवश्यक कार्य
हो ओर उसी दिशा की तरफ यात्रा करनी पड़े, जिस दिन वहाँ दिशाशूल हो तो यहउपाय करके यात्रा कर लेनी चाहिए
रविवार – दलिया और घी खाकर
सोमवार – दर्पण देख कर
मंगलवार – गुड़ खा कर
बुधवार – तिल, धनिया खा कर
गुरूवार – दही खा कर
शुक्रवार – जौ खा कर
शनिवार – अदरक अथवा उड़द की दाल खा कर
साधारणतया दिशाशूल का इतना विचार नहीं किया जाता परन्तु यदि व्यक्ति के जीवन का अति महत्वपूर्ण कार्य है तो दिशाशूल का ज्ञान होने से व्यक्ति मार्ग में आने वाली बाधाओं से बच सकता है | आशा करते हैं कि आपके जीवन में भी यह ज्ञान उपयोगी सिद्ध होगा तथा आप इसका लाभ उठाकर अपने दैनिक जीवन में सफलता प्राप्त करेंगे |

स्वयं सिद्ध मुहूर्त

स्वयं सिद्ध मुहूर्त चैत्र शुक्ल प्रतिपदा वैशाख शुक्ल तृतीया अक्षय तृतीया अश्विन शुक्ल दशमी विजयदशमी दीपावली के प्रदोष काल का आधा भाग भारत में से इसके अतिरिक्त लोकाचार और देश आचार्य के अनुसार

निम्नलिखित कृतियों को भी स्वयं सिद्ध मुहूर्त माना जाता है बडावली नामी देव प्रबोधिनी एकादशी बसंत पंचमी फुलेरा दूज इन में से किसी भी कार्य को करने के लिए पंचांग शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं है परंतु विवाह आदि में तो पंचांग में दिए गए मुहूर्त व कार्य करना श्रेष्ठ रहता है।

अभिजीत मुहूर्त

अभिजीत मुहूर्त प्रत्येक दिन का मध्यम भाग अनुमान त; है 12:00 बजे अभिजीत मुहूर्त कहलाता है जो मध्यम काल से पहले और बाद में दो घड़ी उतार 48 मिनट का होता है दिन मान के आधे समय को स्थानीय सूर्योदय के समय में जोड़ दें तो मध्यम काल स्पष्ट हो जाता है जिसमें 24 मिनट घटाने और चाबी ने 24 मिनट बढ़ाने पर अभिजीत का प्रारंभ काल और समाप्ति काल निकल आता है इस अभिजीत काल में लगभग सभी दोषों के निवारण करने की अद्भुत शक्ति है जब मुंडन आदि शुभ कार्यों के लिए शुभ लगन में ना मिल रहा हो तो अभिजीत मुहूर्त काल में शुभ कार्य करने का किए जा सकते हैं|

चौघड़िया मुहूर्त

समय ज्ञात कर ले अभी ना चौघड़िया में से कौन सी ग्रह और कौन सी जगह है वह दिन की चौघड़िया के चक्कर में उस दिन के बाद के सामने के खाने में देखकर जानिए इसी प्रकार जिस दिन रात्रि में यात्रा करनी हो तो उस दिन के रात्रि में आठवें को घटा घंटा बनाकर उस दिन के सूर्यास्त में जोड़कर रात को आटो चौघड़िया मुहूर्त निकालने और इनका शुभ अशुभ फल रात को चौघड़िया चक्कर में देख लें एवं उत्तम समय शुभ लाभ चौघड़िया का है एक रोग कालका है इन्हें चौघड़िया मुहूर्त प्रत्येक वार सूर्योदय से प्रारंभ होकर अगले सूर्य उदय तक रहता है और सूर्योदय से सूर्यास्त तक का मान उस बार का दिन मान एवं सूर्य अस्त से सूर्योदय तक माणुस वार का रात्रि मान कहलाता है 24 घंटे में दिनमान घटाने से रात्रि माना जाता है अब आपको जिस दिन यात्रा करनी है उस दिन का दिन मान देख लें उसमें 8 से भाग देकर जो बचे उसे घंटा मिनट पर बनाकर उस दिन के सूर्योदय में जोड़ते हुए उस दिन को आठों चौघड़िया मुहूर्त त्याग देना चाहिए।

राहुकाल

रविवार -सायं-- 16:30 से 18:00 बजे तक
राहुकाल

रविवार -सायं-- 16:30 से 18:00 बजे तक
सोमवार - प्रातः-- 7:30 से 9:00 बजे तक

मंगलवार - दोपहर-- 15:00 से 16:30 तक
बुधवार - दोपहर-- 12:00 से 13:30 तक
गुरुवार - दोपहर-- 13:30 से 15:00 बजे तक
शुक्रवार - प्रातः-- 10:30 से 12:00 बजे तक
शनिवार - प्रातः-- 9:00 बजे से 10:30 बजे तक

नोट - वस्तुतः यह राहुकाल दक्षिण भारत की देन है|दक्षिण भारत में राहु काल में शुभ कार्य शुरू करना अच्छा नहीं माना जाता| राहु काल में शुभकार्यओं में वर्जित करने की परंपरा अब अपने उतर भारत में भी अपनाने लगे हैं राहुकाल प्रतिदिन एक घंटा 30 मिनट का होता है

कृपया अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करे-

सतीश शर्मा (जन्म कुंडली विशेषज्ञ)- 9312002527

वर वधू हेतु
वायो डाटा, इ- मेल करे
jankarikal@gmail.com

ये सेवा निःशुल्क है।

संपादक

जानकारी काल

www.jaankaarikaal.com

9312002527